भारत सरकार
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या : 736
दिनांक 13 दिसंबर, 2022 को उत्तर देने के लिए

नए विषाणुओं का खतरा और एहतियाती उपाय

736 श्री कार्तिकेय शर्माः

क्या **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार ने देश में विषाणुओं के नए प्रकारों के माध्यम से फैलने वाली भयंकर बीमारियों के प्रभावों पर गहन अध्ययन किया है;
(ख) यदि हां, तो ऐसे हाल ही में प्रकाश में आए विषाणुओं का ब्यौरा क्या है जिन्होंने भारतीयों को प्रभावित किया है;
(ग) देश में भयंकर बीमारियों को फैलने से रोकने हेतु किए गए एहतियाती उपायों का ब्यौरा क्या है;
(घ) अब तक कितने भारतीय मंकीपॉक्स से प्रभावित हुए हैं;
(ङ) देश में दर्ज किए जा रहे कोविड-19 मामलों की वर्तमान स्थिति का राज्यवार ब्यौरा क्या है; और
(च) देश में इस तरह की गंभीर बीमारियों के विरुद्ध प्रभावी दवाइयों को तैयार करने हेतु किए जा रहे अनुसंधानों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मन्त्री (डॉ. भारती प्रविण पवार)

(क) से (ग): स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के पास भारत के विभिन्न भौगोलिक स्थानों में 145 विषाणु अनुसंधान और नैदानिक प्रयोगशालाओं (वीआरडीएल) का नेटवर्क है। इन नेटवर्क प्रयोगशालाओं को वायरल रोगों की जांच के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। उन्होंने क्लिनिकल, इम्यूनोलॉजिकल और जीनोमिक विश्लेषण, वैक्सीन प्रभावशीलता और पुन: संक्रमण अध्ययनों को समझने के लिए कोविड-19 के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन में भी योगदान दिया है। इन अध्ययनों ने भारतीय संदर्भ में मूल्यवान जानकारी उत्पन्न की है और विभिन्न नीतिगत निर्णय लेने में मदद की है। इसके अलावा, सार्वजनिक स्वास्थ्य महत्व के कई अन्य वायरस जैसे निपाह, डेंगू, जीका, चिकनगुनिया, जापानी एन्सेफलाइटिस, पोलियो, इन्फ्लूएंजा और अन्य श्वसन वायरस का भी वीआरडीएल और आईसीएमआर संस्थानों में अध्ययन किया गया है।

आईसीएमआर-राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान (एनआईवी), पुणे जैव-सुरक्षा स्तर-IV सुविधा से सुसज्जित है। यह उभरते वायरल संक्रमणों के लिए डब्ल्यूएचओ रेफरल सेंटर है और स्वास्थ्य देखभाल क्षेत्र के साथ-साथ उभरते हुए वीआरडीएल के लिए नैदानिक तैयारी और जागरूकता के लिए कार्यशालाओं के संचालन में शामिल है और फिर से उभरने वाली वायरल बीमारियां जो लोगों को संचारी रोगों के प्रसार से बचने के लिए एहतियाती उपाय करने के लिए संवेदनशील बनाती हैं। आईसीएमआर-एनआईवी में राष्ट्रीय इन्फ्लूएंजा केंद्र भी भारत में विभिन्न भौगोलिक स्थानों में स्थित 30 वीआरडीएल की मदद से अखिल भारतीय निगरानी कार्यक्रम के माध्यम से इन्फ्लूएंजा और सार्स-सीओवी-2 वायरस के विकास की निगरानी करता है। इसके अलावा, राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) का एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी) प्रभाग वायरस के नए रूपों के माध्यम से फैलने वाली कठोर बीमारियों सहित विभिन्न संचारी रोगों पर डेटा एकत्र करता है। आईडीएसपी निगरानी नेटवर्क ने सीसीएचएफ (2011), निपाह (2018), जीका (2016), कोविड-19 (2020) और मंकी पॉक्स (2022) जैसे इन वायरसों के कारण होने वाले प्रकोपों का पता लगाया है।

(घ): 8 दिसम्बर, 2022 की स्थिति के अनुसार, राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा साझा की गई सूचना के अनुसार देश में मंकीपॉक्स के कारण कुल 23 पुष्ट मामलों की सूचना मिली है।

(ङ): देश में कोविड-19 मामलों की गति जुलाई 2022 के मध्य से धीमी और निरंतर गिरावट देखी जा रही है। 8 दिसंबर, 2022 तक, राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा साझा की गई जानकारी के अनुसार, देश में कोविड-19 के कुल 4,244 सक्रिय मामले सामने आए हैं। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों का ब्यौरा https://www.mohfw.gov.in/ पर उपलब्ध है।

(च): आईसीएमआर ने कोविड परीक्षण और उपचार के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय कार्य बल का गठन किया है और कोविड प्रबंधन के लिए दवाओं के पुनर्खरीद के लिए दिशानिर्देश जारी किए। कोविड-19 पर राष्ट्रीय कार्य बल ने बीमारी के प्रबंधन पर दिशानिर्देशों को संप्रेषित करने के लिए उभरते सबूतों का मूल्यांकन किया। वयस्क कोविड रोगियों के प्रबंधन के लिए रेमडेसिविर, टोसिलिजुमैब, बुडेसोनाइड और मेथिलप्रेडनिसोलोन के लिए एक नैदानिक मार्गदर्शन जारी किया गया था। कोविड-19 टीकों के संबंध में, आईसीएमआर का अनुसंधान स्वदेशी टीका, कोवैक्सीन के विकास का समर्थन करने में सक्षम रहा है।

*****